साहित्य और प्रकृति का अंतर्संबंध

डॉ. वासुदेवन शेष
पी.एच.डी. डी.लिट्
विदयावाचस्पति विदयासागर, विदया भास्कर

सारांश
साहित्य का प्रकृति से हमेशा अटूट संबंध रहा है या यूँ भी कहा जा सकता है प्रकृति ने अपनी छटा से साहित्य में अनेकों रंग बिखरे है ।प्रकृति मानव की सदैव सहचरी रही है । रामायण काल से ही प्रकृति ने भगवान का चित्रकूट प्रवास, गंगा तट , प्रणकुटी में रहना आदि ने चाहे फिर वे वाल्मिकी ऋषि हो या तुलसीदास जी उन्होने अपनी साहित्य में प्रकृति की अदभूत छवि की भूरि भूरि प्रंशसा की है जिससे रामायण महाकाव्य जन मानस के पटल पर छा गया । जनकपूर में सीता के साथ प्रथम वाटिका मिलन और वहाँ की प्राकृतिक छवि ने राम को मोह लिया ।

कालांतर में महाकवि कालीदास, पंत, महादेवी, हरिऔध, राम कुमार वर्मा, भारतेन्दु जयशंकर प्रसाद, निराला और बच्चन । हिंदी के ही नहीं अन्य भाषाओं के साहित्यकारों ने कवियो ने अपने साहित्य में प्रकृति को जोडा है । प्रकति के अनोखे रूप को अपने संवादों में नाटको में उपन्यासों में कहानियों में उकेरा है । हमें यह कहने में कोई संकोच नही जहाँ प्रकृति नहीं वहाँ साहित्य नहीं।

बीज शब्द
मानवेतर जगत,नैसर्गिक, सहचरी,कौतुहल,चेतना का विकास,सौन्दर्य का अक्षय भण्डार,अविछिन्न सम्बन्ध,

प्रकृति से अभिप्राय –डॉ किरण कुमारी गुप्ता के अनुसार "---व्यावहारिक रूप से तो जितनी मानवेतर सृष्टि है, उसको ही हम प्रकृति कहते हैा किन्तु दार्शनिक दृष्टि से हमारा शरीर और मन, उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ, मुन-बुद्धि, चित्त , अहंकार आदि सूक्ष्म तत्व प्रकृति के अन्तर्भूत है "।सांख्यदर्शन की प्रकृति सारी सृष्टि का कारण है । वेदान्तियों ने भी भिन्न-रूप से प्रकृति की व्याख्या की है । शांकर मत के अनुसार वह माया के रूप से अनिर्वचनीय है । विशिष्टाद्वैत में वह उचित रूप से ब्रह्मा का एक विशेषण है । लेकिन व्यावहारिक क्षेत्र में प्रकृति का अर्थ मानेवतर जगत है । प्रकृति या प्राकृतिक शब्द का अर्थ है स्वाभाविक । अत: प्रकृति के अंतर्गत वे सारी वस्तुएं आती है जो मानव के हाथो से सजाया या संभाला नहीं गया है और जिनकी नैसर्गिक सुंदरता दर्शकों को आकर्षित एवं मंत्रमुग्ध् करती है ।

नैसर्गिक रूप ,रस, गंध, स्पर्श ,श्रवण आदि द्वारा औरों को आकर्शित करनेवाली सभी वस्तुएं प्रकृति के अंतर्गत आती है । इनके आलावा पशु पक्षी भी प्रकृति के अंतर्गत आ जाते है क्योंकि ये प्रकृति के अभिन्न अंग हैं । प्रकृति मानव की आदि सहचरी है । प्रकृति के क्रोड में उत्पन्न मानव ने उसी के संपर्क में धीरे –धीरे अपनी चेतना का विकास किया है । प्रकृति ने ही आदि मानव की भूख, प्यास आदि सहज वृत्तियों का समाधान किया । इसी के कारण मानव और प्रकृति के बीच अटूट संबंध स्थापित हुआ । मानव की हृदयगत भावनाओं के विकास में भी प्रकृति का मुख्य स्थान है । मानव के चेतन मस्तिष्क में पहले पहल प्रकृति के अलौकिक एवं असीम अंगों के प्रति कौतुहल उदय हुआ, उसके बाद प्रकृति के विशाल रूप को देखकर मानव चकित हुआ| प्रकृति पुन:शांत रूप में लक्षित हुई तो मानव हृदय में उसके प्रति एक नवीन भावना का उदय हुआ जो विश्वास कहलाता है। प्रकृति के भिन्न- भिन्न रूपों के दर्शन के उपरांत प्रकृति की शक्ति की तुलना में मानव ने अपने को तुच्छ माना।

प्रकृति मानव के लिए चिंतन एवं मनन का विषय बन गया। मानव प्रकृति के मंगलमय कृतियों से बहुत प्रभवित हुआ । अत: वह प्रकृति में देवत्व की प्रतिष्ठा कर उसका गुणगान करने लगा । मानव ने प्रकृति के विभिन्न अंगों को इन्द्र, सूर्य,वरूण, चन्द्र, वायु, पृथ्वी आदि नाम भी दिये । मानव के चेतन मस्तिष्क में प्रकृति के प्रति पूजा की भावना का उदय हुआ ।मानव ने एक ऐसी शक्ति की कल्पना की जो समस्त विश्व की संचालिका है । मानव की कल्पना अनुसार उस शक्ति के अभाव में प्रत्येक परमाणु निश्चेष्ट बन जाता है। मानव के विश्वास के अनुसार जड चेतन, चर-अचर सभी के क्रिया कलापों में यही अव्यक्त एवं अज्ञात शक्ति अनुस्यूत है।

महाकाव्यों में आकर प्रकृति मानव ह्रदय की विभिन्न भावनाओ की क्रीडा भूमि बन गयी । वाल्मीकी के राम की वियोगावस्था में प्रकृति उनकी सहयोगिनी सी बन गयी । उदाहरण : वाल्मीकी आरण्य 52 –श्लोक-38 में (सीता हरण से दु:खी पर्वत श्रेणियाँ अपने शिखर भी भूजाओं को उठा, झरनों के बहाने अश्रुबहा मानों रो रही है) सृष्टि के आरंभ और विकास का इतिहास जितना पुराना है उतना ही पुराना है मानव और प्रकृति का संबंध भी ।इस अटूट संबंध की अभिव्यक्ति, धर्म, दर्शन, साहित्य और कला में चिरकाल से होती रही है । मानव जीवन का प्रतिंबिंब है साहित्य अत: उसमें उसकी सहचरी प्रकृति का भी प्रतिबिंब मिलना स्वाभाविक है। प्रकृति मानव ह्रदय और काव्य के बीच संयोजन का कार्य भी करती रही है । प्रकृति हमारे कवियों के लिए प्रभा का स्त्रोत ही नहीं, सौन्दर्य का अक्षय भण्डार,कल्पना का अदभूत लोक, अनुभूति का अगाध सागरऔर विचारों की अटूट श्रृंखला भी है ।

हिंदी साहित्य में सभी ख्याति प्राप्त साहित्यकारों ने अपने काव्यों , कहानियों, उपन्यासों, नाटकों में बखुबी प्रकृति चित्रण किया है ।प्रकृति के चित्रण के बिना साहित्य अधुरा है ।साहित्य का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि मानव और प्रकृति के बीच अविछिन्न सबंध है । साहित्य का मुख्य विषय है मानव ,लेकिन प्रकृति के सहयोग के बिना मानवीय चेष्टाओं एव मनोदशाओं की अभिव्यक्ति भाव रहित और नीरस बन जाती है । उदार प्रकृति मानव के भौतिक जीवन के लिए आवश्यक सार सामग्री प्रदान करती है । उसी प्रकार उसके भैतिक, आध्यातमिक तथा भावात्मक जीवन को भी यथेष्ट वस्तुएं प्रदान करके उसे सपन्न बनाती है ।कविगण अपने काव्यों में प्रकृति के विभिन्न रूपों एवं तत्वों का भी वर्णन करते हैं । प्राकृतिक सौंदर्य से आकृष्ट मानव आत्मविभोर हो जाता है । आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार---" मानव मन की यही देशा मुक्तावस्था कहलाती है और यही मुक्तावस्था रस दशा है ।"

प्रकृति के उपयोगी और विश्लेषणात्मक रूप का विचार करनेवाला मानव वैज्ञानिक है । प्रकृति के सौन्दर्य पर लीन होकर उसका वर्णन करनेवाला व्यक्ति भावुक कवि है । दोनों ही प्रकृति से संबंध स्थापित करते हैं । लेकिन दोनों के दृष्टिकोण में भिन्नता है । महाकवि कालीदास के रघुवंश में वैविद्यपूर्ण प्रकृति का विविध रूपों में चित्रण हुआ है । अनेक स्थानों में प्रकृति राम और सीता के लिए उद्दीपन रूप में प्रस्तुत हुई है ।प्राकृतिक तत्व पात्रों के भावों से इतने मिल जुल गये हैं कि प्रकृति मानो एक संवदेना युक्त पात्र की तरह दिखायी देती है । जब राघव युद्ध जीत कर सीता सहित लौटते हैं तब पहले देखे हुए प्राकृतिक दृश्य उनको अत्यधिक मोहित करते हैं । वे प्रकृति से अत्यधिक अभिभूत होकर सीता को पूर्व जीवन की घटनाओं की याद दिलाते है । ऐसे संदर्भों में दोनों की संवदेनाओं को जगाने में प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान है ।

कालीदास के 'मेघदूत' में प्रकृति का इतना महत्वपूर्ण स्थान है कि नायक यक्ष मेघ को दूत बनाकर अपनी विरह गाथा सुनाने नायिका के पास भेजता है । 'कुमारसंभव' आदि उनकी अन्य रचनाओं में भी प्रकृति को महत्वूपर्ण स्थान प्राप्त है । भारतीय साहित्य में ही नहीं पाश्चात्य साहित्य में भी प्रकृति को साहित्य का अभिन्न अंग माना है । मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए हर देश के कवियों ने प्रकृति का सहारा लिया है । ग्रीक , लैटिन जैसी भाषाओं के प्राचीन साहित्य में प्रकृति वर्णन का अक्षय भंडार है | विश्व विख्यात नोबल पुरस्कार प्राप्त महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं में भी प्रकृति का वर्णन मिलता है उनकी गीतांजलि का एक उदाहरण दृष्टव्य है -

आषाढ की सन्ध्या घनी हो गयी,
दिवस का अवसान हो गया ।

अंधेरी रात के सारे रिक्त पहर आज फिर स्वरों से भर सकूँगा ? कौन सी मुरली खोने से मैं आज सब भूलकर व्याकुल हो उठा हूँ-

वर्षा की जलधारा रह रहकर बरस रही है ।"

आदिकाल से लेकर आजतक के साहित्य का अध्ययन करने से यह बात स्पष्ट होती है कि अपभ्रंश काल में स्वयंभू,पुष्पदंत आदि की रचनाओं में नदी, पर्वत,वन, समुद्र आदि का मोहक वर्णन मिलता है ।संदेश रासक आदि अति प्राचीन रचनाओं में तो पूरा पूरा प्रकृति वर्णन ही देखने को मिलता है उसके बाद प्रकृति के विशाल रूप को देखकर मानव चकित हुआ | प्रकृति पुन:शांत रूप में लक्षित हुई तो मानव ह्रदय में उसके प्रति एक नवीन भावना का उदय हुआ जो विश्वास कहलाता है । प्रकृति के भिन्न- भिन्न रूपों के दर्शन के उपरांत प्रकृति की शक्ति की तुलना में मानव ने अपने को तुच्छ माना । वीरगाथा काल के काव्यों में यद्यपि वीर रस की प्रधानता है फिर भी कवियों ने प्रकृति का विशद वर्णन किया है । पृथ्वीराज रासों में विभिन्न ऋतुओं में प्रकृति की दशा का वर्णन किया है । वर्षा की समय की परिस्थितियां का विशद वर्णन मिलता है ---

झिरमिर झिरमिर झिरमिर ए मेहाबरिसंति ।
खलहल खलहल खलहल बादला वहंति ।
झब झब झब झब झबझब बीजुलिय झबकाइ ।
थरहर थरहर थरहर ए विरहिणिमणु कंपइ ।"

प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों ने प्रकृति को महत्वपूर्ण स्थान दिया है । जैसे पद्मावत में तो प्रकृति के सुन्दर एवं स्वाभाविक वर्णनों को अक्षय भंडार विद्यमान है ---

बसहिं पंखि बोल हिं बहु भाखा । कर
हिं हुलास देखि कै साखा ।
भेर होत बोलहिं चुह चूही।
बोलहिं पॉडुक 'एक तूही ' !

आधुनिक युग में भारतेन्दु युग हिंदी काव्य में विचार और अभिव्यंजन की दृष्टि से परिवर्तन का युग था । काव्य के सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। इससे प्रकृति वर्णन की परिपाटी में भी काफी परिवर्तन आया ।रीतिकालीन काव्य की रूढिबद्ध शैलियों और विषय की सीमाओं को तोडकर कविता को नई दिशा देने का प्रयास किया गया ।इसका प्रभाव तत्कालीन प्रकृति वर्णन पर भी पडा । नयी शैली में अधिक स्वच्छंदता के साथ अनेक कवियों ने प्रकृति वर्णन प्रस्तुत किये। भारतेन्दु की महिमा में एक ओर गंगा के मनोहर रूप का चित्रण किया गया है तो दूसरी ओर भारतीय संस्कृति से उसका संबंध जोड़ा गया है। श्रीधर पाठक की 'काश्मीर सुषमा' रोमांतिक भाव विकास उत्तम उदाहरण है।

द्विवेदी युग के कवियों में भी अनेको ने अपने काव्य में प्रकृति को यथेष्ट स्थान दिया है ।मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, श्यामनारायण पाण्डेय, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा आदि के नाम उल्लेखनीय है ।इस काल में स्वच्छंद भाव विकास की प्रवृत्ति अधिक बढी जिसका प्रभाव तत्कालीन प्रकृति वर्णनों में भी देखा जा सकता है । रामनरेश त्रिपाठी के मिलन, पथिक,स्वप्न आदि के प्रकृतिवर्णन अत्यंत स्वच्छंद कल्पना के उदाहरण है। दूसरी ओर मैथिली 'शरण गुप्त की कविताओं में प्रकृति के द्वारा भी आदेर्शो को प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति अधिक मिलती है । मैथिल कोकिल विद्यापति की रचनाओं में यद्यपि श्रृंगार की प्रधानता है तथापि स्थान स्थान पर उन्होनें बारहमासा,षटऋतु का भी चित्रण किया है । अधिकतर उद्दीपन रूप में ही उन्होनें प्रकृति को अपनाया है तो भी कहीं कहीं प्रकृति का आलंबन रूप भी लक्षित होता है ---

माघ मास सिरि पंचमि गँजइलि
नवए माँस पंचम हरूआइ ।
अतिपन पीडा दुख बड पाओल
बनस्पति के बधाइ हो ।"

धीरे धीरे यह प्रवृत्ति बढती गयी और और अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध में आकर प्रकृति को काव्य में एक विशिष्ट स्थान मिला । उनकी प्रमुख रचना "प्रिय प्रवास" का आरंभ ही प्रकृति वर्णन से हुआ है ।

दिवस का अवसान समीप था
गगन था कुछ लोहित हो चला ।
तरू शिखर पर थी अब राजती
कमलिनी कुल वल्लभ की प्रभा ।"

हरिऔध के बाद मैथिलीशरण गुप्त और रामनरेश त्रिपाठी को इस परम्परागत काव्य के पोषक मान सकते हैं । गुप्त जी का एक उदाहरण प्रस्तुत है –

नहलाती है नभ की दृश्टि
अंग पोंछती आतप सृष्टि,
करता है शीश शीतल दृष्टि
देता है ऋतु पति न श्रृंगार
ओ गौरव गिरि , उच्च उदार ।"

जयशंकर प्रसाद का महाकाव्य कामायनी में सर्वत्र प्रकृति चित्रण का सौकुमार्य दर्शित है । उन्होनें प्रकृति के विभिन्न रूपों सुकुमार, शांत, रौद्र, विकराल का सुन्दर चित्रण किया है ।

वह विवर्ण मुख त्रस्त प्रकृति का आज लगा हॅसने फिर से
वर्षा , बीती, हुआ सृष्टि में शरद विकास नये सिर से ।
नव कोमल आलोक बिखरताहिम संसृति पर भर अनुराग।
सित सरोज पर क्रिडा करता जैसे मधुमय पिंग पराग ।"

यहाँ प्रकृति का हँस मुखी नायिका के रूप में प्रकट कर उसका सांगोपांग वर्णन किया| छायावादी युग के कवियों के लिए प्रकृति ही प्राण है । सुमित्रानंदन पंत जी तो प्रकृति के ही कवि है । पंत की संपूर्ण रचनाओं में प्राकृतिक सुषमा खुलकर खेलती है । प्राकृतिक सौन्दर्य के अन्नय आराधक है पंत जी ।

छोड द्रमों की मृदु छाया, तोड प्रकृति से भी माया,
बाले तेरे बाल जाल पर कैसे उलझा दूँ लोचना
भूल अभी से इस जग को ।"

ये कहकर पंत ने प्रेयसी से बढकर प्रकृति को अधिक महत्व दिया है। प्रकृति का आलंबन रूप में चित्रण पंत में प्रचुर मात्रा में मिलता है –

कैसी किरणें बरस रहीं
जाने किस नभ से,
प्रिय श्री पाटल का मुख
फालसई आभा से
दिखता परिवृत्त
शुभ्र कुंद कलियाँ
स्वर्णिम हँस मुख मण्डल से
लगती शोभित ।"

यहाँ प्रकृति सुन्दरी ही कवि की कृति का आलंबन हे ।उसके शरीर के प्रत्येक अंग का सूक्ष्म एवं विशद वर्णन कवि करते है।

महाप्राण निराला जी की अनेक कविताओं में भी प्राकृतिक वस्तुओं को मूर्तिमान बनाने वाला मानवीकरण दृष्टव्य है ।---

विजन वन वल्लरी पर
सोती थी सुहाग भरी—
स्नेह –स्वन –मग्न
अमल कोमल तनु तरूणी
जुही की कली,
दृग बंद किये , शिथिल, पंत्राक में ।"

यहाँ कवि जुही की कली को निद्रा में लीन नारी के रूप में चित्रित करता है । अंग प्रत्यंग का मानवीकृत वर्णन एक सामान्यत कली कैसे एक राग विराग मय युवती के रूप में हमारे सामने आता है ।

प्रसाद जी कामायनी में प्रकृति को प्रियतम से मान किये बैठी एक नारी के रूप में चित्रित किया है।---

सिंधु सेज पर धरा वधु जब तनिक संकुचित बैठी थी ।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किये सी ऐंठी सी ।"

उन्होनें प्रकृति का चित्रण करते हुए भी सर्वत्र उसे कोमलतम रूप में चित्रित किया और उस पर तरलतम भावों को आरोप किया है ।

रामकुमार वर्मा में भी प्रकृति के प्रति विशेष अनुराग पाते है ।रामकुमार वर्मा की रचनाओं में रहस्यवाद की प्रधानता है ।उस अलौकिक परम सत्ता का, प्रिय का सौंदर्य प्रकृति के प्रत्येक अंग में झलकता है । यह देखकर कवि को कौतुहल होता है 1 ओस की मुस्कान, विहंगों के कुजंन मे, संध्या के मिलन और उदास वातावरण मे हर कहीं प्रिय की महानता दिखाई पडती है ।

कौन गा रहा है कोकिल के
कंठों से मधुमय कल गान
कौन भ्रमर बन कर करता है
कलियों से नूतन पहिचान ।"

कवि की इसी अनुभूति के कारण वे प्रकृति चित्रण में रहस्यवसाद के प्रवाह में बह जाते है फूल कली लहर निर्झार सभी में वे ईश्वरीय संकेत पाते है ।

इसी प्रकार महादेवी वर्मा की रचनाओं नीहार से प्रांरभ होकर दीपशिखा, हिमालय, सांध्यगीत,रश्मि, नीरजा, यामा में संकिलत किया। इन सभी कृतियों में प्राकृतिक चित्रण देखा जा सकता है । वर्तमान युग में नई कविता का बोलबाला है । इन कवियों ने प्रकृति की उपेक्षा नहीं की। तथापि उनके प्रस्तुतीकरण का कुल अलग ढंग है फिर भी उन्होनें रात, दिन, बंसत, धूप, वर्षा आदि का वर्णन किया है । अपनी प्रेमिका की, या बीते यौवन की याद इन प्राकृतिक क्रियाओं को देखकर इन कवियों के हृदय में भी उदित होती है ।

यह जुलाई की हल्की –
उभरती धूप—और आसमान में छितरी—काली घटाएं
पता नही कयों—याद दिला रही है उस नव यौवन की जिसने
अभी अभी –अपने उलझे बाल धोकर निचोडे है। "

निष्कर्षत : यही कहा जा सकता है के छायावादी कवियों ने प्रकृति को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में भावनाओं के चित्रण का आधार बनाकर कविता को अत्यंत मार्मिक बनाया है और साहित्य का प्रकृति के साथ अटूट संबंध को पूर्ण रूपेण स्थापित किया है । साहित्य से मानव और मानव से प्रकृति कभी अलग नहीं हो सकता है । दोनों का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है | प्रकृति का अनुपम सौन्दर्य रचनाकारों को सदैव प्रभावित करता रहा है |

संदर्भ :

1. किरण, डॉ वत्सला.(2015).महादेवी वर्मा के साहित्य में प्रकृति चित्रण.जयंती पब्लिकेशनस. वडपलनी. चेन्नई.
2. डॉ मधुधवन. (2010).हरिऔध के साहित्य में प्रकृति सौंन्दर्य. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
3. शेष, डॉ वासुदेवन. (2017).आधुनिक कवियों के काव्य पर समालोनात्मक दृष्टि.हिंदी साहित्य में प्रकृति चित्रण.(सं).शासुन जैन कालेज.बोध प्रकाशन.चैन्नई.
4. गुप्ता, डॉ किरण कुमार.हिंदी काव्य में प्रकृति चित्रण.बोध प्रकाशन ,चैन्नई.पृष्ठ 6